Gyanvividha, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : PP-391-396

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 391-396
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

संजय साह

शोधार्थी-जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (बिहार).
राज्य सहायता प्राप्त महाविद्यालय शिक्षक, आशुतोष कॉलेज, कोलकाता.

Corresponding Author :

संजय साह

शोधार्थी-जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (बिहार).
राज्य सहायता प्राप्त महाविद्यालय शिक्षक, आशुतोष कॉलेज, कोलकाता.

हिंदी कहानी की नींव : प्रारंभिक दौर का साहित्यिक विश्लेषण

कहानी मानव सभ्यता की अत्यंत प्राचीन और स्वाभाविक अभिव्यक्तियों में से एक रही है। यह केवल मनोरंजन का साधन भर नहीं, बल्कि समाज, संस्कृति, विचार और मानवीय संवेदनाओं की गहराइयों को व्यक्त करने का प्रभावी माध्यम भी है। हिंदी कहानी को इसी दृष्टि से देखा जाए तो यह मात्र एक साहित्यिक विधा नहीं, बल्कि समाज का जीवंत प्रतिबिंब है, जिसमें समय के साथ बदलते जीवन-मूल्य, संघर्ष, आकांक्षाएँ और दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आते हैं।संस्कृत साहित्य में 'कहानी' के लिए 'कथा' शब्द का प्रयोग किया जाता रहा है। 'कथा' के अंतर्गत अनेक रूप जैसे आख्यान, उपाख्यान, आख्यायिका, वृत्त, इतिवृत्त, गाथा, इतिहास, पुराण, वार्ता और चरित प्रचलित रहे हैं, जो विभिन्न प्रकार के वर्णनात्मक साहित्य को व्यक्त करते हैं। कालांतर में यही 'कथा' शब्द अपभ्रंश रूप में परिवर्तित होकर 'कहा' बना और फिर क्षेत्रीय भाषाओं जैसे अवधी, भोजपुरी आदि में 'कहनी' तथा 'कहानी' के रूप में विकसित हुआ।

पाश्चात्य साहित्यकारों के मतानुसार "Short Story" की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उसे एक ही बैठक में सहज रूप से पढ़ा जा सके। पश्चिमी कथा परंपरा में एडगर एलन पो का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और उन्हें आधुनिक लघु कहानी का प्रवर्तक भी स्वीकार किया जाता है। उन्होंने कहानी को केवल घटनाओं के साधारण वर्णन के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे एक सुविचारित और कलात्मक रचना के रूप में स्थापित किया। उनके अनुसार—"A short story is a narrative short enough to be read in a single sitting, written to wake an impression on the reader, excluding all that does not forward that impression, complete and final in itself."[1] इस कथन से स्पष्ट होता है कि पो लघु कहानी में संक्षिप्तता को अत्यधिक महत्त्व देते हैं। उनके अनुसार कहानी इतनी सीमित आकार की होनी चाहिए कि पाठक उसे बिना किसी व्यवधान के

एक ही बार में पढ़ सके। यहाँ संक्षिप्तता का अर्थ केवल शब्द-संख्या से नहीं, बल्कि विचारों की सघनता और प्रस्तुति की सटीकता से भी है, जहाँ अनावश्यक विस्तार के लिए कोई स्थान नहीं होत।इस प्रकार पो की दृष्टि में लघु-कहानी एक अनुशासित, सुसंगठित और उद्देश्यपूर्ण साहित्यिक विधा है, जिसमें प्रत्येक तत्व का चयन अत्यंत सजगता के साथ किया जाता है। यही कारण है कि उनके सिद्धांत आज भी कहानी लेखन की प्रक्रिया में मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार किए जाते हैं।

मुंशी प्रेमचंद ने 'मानसरोवर' की भूमिका में कहानी की प्रकृति और उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है "वर्तमान आख्यायिका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और जीवन के यथार्थ व स्वाभाविक चित्रण को अपना ध्येय समझती है । उसमें कल्पना की मात्रा कम, अनुभूतियों की मात्रा अधिक होती है, बल्कि अनुभूतियाँ ही रचनाशील भाव से अनुरंजित होकर कहानी बन जाती है "[2]इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक कहानी केवल कल्पना पर आधारित नहीं होती, बल्कि वह जीवन के वास्तविक अनुभवों और मनोवैज्ञानिक स्थितियों से निर्मित होती है। इस प्रकार कहानी का विकास केवल साहित्यिक प्रयोग का परिणाम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ जुड़ी एक जीवंत अभिव्यक्ति है, जो समय के साथ निरंतर विकसित होती रही है।

आधुनिक कहानी की विशेषता यह है कि वह घटनाओं का मात्र क्रमिक विवरण प्रस्तुत नहीं करती, बल्कि जीवन के किसी तीव्र और अर्थपूर्ण क्षण को पकड़कर उसे प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त करती है। जिस प्रकार अंधकार में अचानक बिजली चमकने पर दृश्य स्पष्ट हो उठता है, उसी प्रकार कहानी भी किसी एक क्षण के माध्यम से यथार्थ को तीव्रता से उद्घाटित करती है। इस संदर्भ में प्रो0 सत्यकाम का मत उल्लेखनीय है—" कहानी में यथार्थ की स्थिति बिजली की चमक की तरह होती है, जहाँ यथार्थ का कोई क्षण सहसा उद्भासित हो जाता है।"[3]

आचार्य शुक्ल ने हिंदी कहानी को गद्य परंपरा के विकासक्रम से जोड़कर देखा है। उनके अनुसार आधुनिक हिंदी कहानी की जड़ें लोककथाओं, धार्मिक आख्यानों और पारंपरिक कथाओं में निहित हैं। वे मानते हैं कि कहानी का उद्देश्य जीवन के विविध अनुभवों और चरित्रों को कलात्मक तथा सजीव ढंग से प्रस्तुत करना है। इस संदर्भ में उनका कथन है—"कथा वह गद्य रचना है जिसमें किसी जीवन घटना या कल्पित प्रसंग का सजीव संक्षिप्त और प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत किया जाता है"[4] यद्यपि यह परिभाषा शुक्ल जी द्वारा सीधे रूप में नहीं दी गई, तथापि उनके आलोचनात्मक लेखन के आधार पर इस प्रकार का निष्कर्ष स्पष्ट रूप से सामने आता है।

इसी प्रकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी हिंदी कहानी के विकास को परंपरा और आधुनिकता के समन्वय के रूप में देखा है। उन्होंने कहानी को लोककथाओं की परंपरा से जोड़ते हुए यह माना कि आधुनिक युग में नए साधनों और परिवर्तित जीवन परिस्थितियों ने इसके विकास को गति दी। उनके अनुसार—" कहानी कहने की प्रथा कोई नई चीज़ नहीं है, पर कहानी नामक नया साहित्यांग आधुनिक युग की देन है। यह भी प्रेस और यातायात के नवीन साधनों की सहायता से विकसित हुआ है और लोकप्रिय बना है। शुरु-शुरु में पश्चिमी देशों में भी उपन्यास और कहानी में कोई भेद नहीं माना जाता था, पर जैसे-जैसे सभ्यता की भीड़ बढ़ती गई, वैसे-वैसे अल्प समय में छोटे-छोटे साहित्यांगों का विकास भी होता गया। ..... कथा के क्षेत्र में कहानी इसी प्रयास का फल है।"[5] इन विचारों से स्पष्ट है कि हिंदी कहानी का स्वरूप परंपरा और आधुनिकता के समन्वय से निर्मित हुआ है, जिसमें लोकजीवन की जड़ें भी है और आधुनिक जीवन-बोध की संवेदनाएँ भी।

हिंदी कहानी का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया का परिणाम है, जो मानव सभ्यता, सामाजिक परिवर्तन और बौद्धिक उन्नति के साथ विकसित हुई है। प्रारंभिक साहित्य में महाकाव्य और उपन्यास जैसी विस्तृत विधाएँ प्रमुख थीं, जिनमें जीवन का व्यापक चित्रण मिलता है। समय के साथ मनुष्य की चेतना अधिक सूक्ष्म और विश्लेषणात्मक हुई, जिससे छोटे-छोटे अनुभवों और मनोवैज्ञानिक स्थितियों को अभिव्यक्ति देने की आवश्यकता महसूस हुई। यही प्रवृत्ति

कहानी के विकास का आधार बनी।आधुनिक युग में जीवन की तीव्र गति और समयाभाव ने संक्षिप्त तथा प्रभावशाली अभिव्यक्ति को महत्त्व दिया, जिससे कहानी एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित हुई। पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव ने भी हिंदी कहानी को सघन, यथार्थवादी और कलात्मक स्वरूप प्रदान किया।हिंदी साहित्य में आधुनिक कहानी के विकसित होने से पहले लाला श्रीनिवास दास, बालकृष्ण भट्ट, राधाकृष्ण दास, किशोरीलाल गोस्वामी, देवकीनंदन खत्री और गोपालराम गहमरी जैसे उपन्यासकारों ने कथा-साहित्य की आधारभूमि तैयार की, यद्यपि उस समय कहानी का स्वरूप पूर्णतः विकसित नहीं हुआ था।

हिंदी कहानी की उत्पत्ति को लेकर विद्वानों में मतभेद पाए जाते हैं। कुछ आलोचक इसकी जड़ों को प्राचीन आख्यानों, जातक कथाओं और धार्मिक ग्रंथों में खोजते हैं, जबकि 'प्रेमसागर', 'नासिकेतोपाख्यान' और 'रानी केतकी की कहानी' जैसी रचनाओं को भी प्रारंभिक रूप से जोड़ा जाता है। किन्तु ये रचनाएँ आधुनिक कहानी की आवश्यक विशेषताओं जैसे मनोवैज्ञानिक गहराई, यथार्थ चित्रण और एकात्मक प्रभाव से पूर्णतः युक्त नहीं हैं, क्योंकि इनका उद्देश्य मुख्यतः उपदेश देना रहा है। इसी कारण हिंदी कहानी का वास्तविक विकास बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में माना जाता है। इस संदर्भ में श्रीकृष्ण लाल का मत उल्लेखनीय है—"हिन्दी कहानी का वास्तविक विकास प्रयाग से प्रकाशित पत्रिका सरस्वती के माध्यम से आरम्भ हुआ, जिसे 1900 ई0 में इंडियन प्रेस ने चलाया था।"[6] प्रारंभिक दौर में हिंदी कहानी का विकास अनुवाद और अनुकरण के माध्यम से हुआ। 'सरस्वती' और 'इंदु' जैसी पत्रिकाओं में अंग्रेजी और बंगला कहानियों के अनुवाद प्रकाशित होते थे, जिनसे हिंदी लेखकों को नई कथा शैली की प्रेरणा मिली। गोपालराम गहमरी ने अंग्रेजी जासूसी साहित्य से प्रभावित होकर कहानियाँ लिखीं, जबकि शेक्सपियर के नाटकों का भी हिंदी रूपांतरण किया गया।अतः स्पष्ट है कि हिंदी कहानी का प्रारंभ अनूदित और रूपांतरित रचनाओं से हुआ, जिसके आधार पर आगे चलकर मौलिक कहानी लेखन विकसित हुआ और हिंदी कहानी ने अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित की।

हिंदी की पहली मौलिक कहानी को लेकर विद्वानों में मतभेद है। डॉ. रामरतन भटनागर 'रानी केतकी की कहानी' को प्रथम मौलिक रचना मानते हैं, जबकि श्रीकृष्ण लाल के अनुसार 1900 ई0 में प्रकाशित किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' "हिन्दी की सर्वप्रथम मौलिक कहानी" है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'इन्दुमती', 'ग्यारह वर्ष का समय' और 'दुलाईवाली' को प्रारंभिक कहानियों में माना है और कहा—"यदि 'इन्तुमती' किसी बांग्ला कहानी की छाया नहीं है तो हिन्दीकी पहली मौलिक कहानी ठहरती है।"[7]

डॉ. भटनागर ने 'इन्दु' पत्रिका की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए लिखा—"मौलिक कहानियों के विकास में 'इन्दु' का हाथ प्रधान रहा है। वर्तमान युगकी प्रथम मौलिक कहानी श्री जयशंकर प्रसाद की ग्राम कहानी है।"[8] इन मतों से स्पष्ट है कि किसी एक कहानी को निश्चित रूप से पहली मौलिक हिंदी कहानी नहीं माना जा सकता, किंतु 1900 ई0 के आसपास हिंदी कहानी का स्वतंत्र रूप विकसित होने लगा।

1900 ई0 से 1910 ई0 का काल हिंदी कहानी के प्रारंभिक विकास का महत्वपूर्ण दौर है, जब कहानी ने एक स्वतंत्र विधा के रूप में आकार लेना शुरु किया। इस समय 'इन्दुमती' जैसी रचनाएँ प्रमुख थीं, यद्यपि कुछ विद्वान इसे शेक्सपियर के प्रभाव से प्रेरित मानते हैं। इसी काल में 'सरस्वती' पत्रिका में केशव प्रसाद सिंह की 'चंद्रलोक की यात्रा' आदि रचनाएँ भी प्रकाशित हुईं, जिनमें नई कथात्मक प्रविधियों जैसे पत्र, यात्रा और स्वप्न का प्रयोग हुआ, परंतु वे पूर्णतः कहानी के रूप में विकसित नहीं हो सकीं।

किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' को अनेक आलोचक हिंदी की पहली कहानी मानते हैं, क्योंकि इसमें कथानक, पात्र, संघर्ष और समाधान के तत्व मिलते हैं। यह एक प्रेमकथा है, जिसमें इंदुमती और चंद्रशेखर के प्रेम, संघर्ष और अंततः मिलन का चित्रण है। कथा में भावनात्मक और नाटकीय स्थितियाँ प्रमुख हैं, जैसे—" वह अपने पिता

का ऐसा अनूठा क्रोध देख पहले तो बहुत डरी फिर अपने ही लिए एक युवा बटोही विचारे का प्राण जाते देखा जी कड़ा कर बूढ़े के पैरों में गिर पड़ी और रो-रो ,गिड़गिड़ा - गिड़गिड़ा कर युवक के प्राण की भिक्षा मांगने लगी।"[9]
तथा—" महाशय इस विचारी का कोई अपराध नहीं है, इसे छोड़ छोड़ दीजिए जो कुछ दंड देना है वह मुझे दीजिए।"[10] अंततः पिता दोनों के प्रेम और त्याग से प्रभावित होकर उनका विवाह कर देता है। इस प्रकार 'इन्दुमती' में आधुनिक कहानी के प्रारंभिक तत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

फरवरी 1968 में कमलेश्वर संपादित 'सारिका' पत्रिका में हिंदी की पहली कहानी तथा माधवराव सप्रे के योगदान को लेकर महत्वपूर्ण बहस हुई। इस संदर्भ में आलोचक गोपाल राय लिखते हैं—"सारिका के इस अंक में देवी प्रसाद वर्मा का लेख हिंदी की पहली कहानी एक महत्वपूर्ण प्रश्न देते हुए संपादक ने टिप्पणी दी , हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी कौन सी है ? .....सन 1901 में प्रकाशित यह कहानी (एक टोकरी भर मिट्टी) कालक्रमानुसार भी हिंदी की मौलिक कहानी ठहरती है। आचार्य लोग स्प्रे जी की इस कहानी की ओर ध्यान ना दे पाए ,क्योंकि यह सरस्वती में ना छपकर छत्तीसगढ़ मित्र में छपी थी। हिंदी को अहिंदी भाषी लेखकों का बराबर सहयोग प्राप्त होता रहा । यह हिंदी के लिए गर्व की बात है और हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी लेखन का श्रेय यदि मराठी भाषी स्प्रे को जाता है तो यह भी गर्व की बात होनी चाहिए।"[11] 'एक टोकरी भर मिट्टी' को हिंदी की प्रारंभिक और महत्वपूर्ण मौलिक कहानियों में विशेष स्थान प्राप्त है। आकार में छोटी होने के बावजूद यह कहानी अपने कथ्य और संवेदनात्मक प्रभाव के कारण अत्यंत प्रभावशाली है। इसका मुख्य विषय सामंती व्यवस्था और उससे उत्पन्न शोषण है। कहानी में एक जमींदार एक निर्धन विधवा की झोपड़ी पर अधिकार करना चाहता है—"वह विधवा तो कई जमाने से वहीं बसी थी ,उसका प्रिय पति और इकलौता पुत्र भी उसी झोपड़ी में मर गया था । पतोहू भी पांच बरस की कन्या को छोड़कर चल बसी थी ।"[12] अंततः जमींदार उस विधवा को हटाने में सफल हो जाता है, लेकिन कहानी का मार्मिक मोड़ तब आता है जब वह वृद्धा अपनी झोपड़ी की मिट्टी में से केवल एक टोकरी भर मिट्टी लेने की अनुमति माँगती है और कहती है—"महाराज, कृपा करके इस टोकरी को जरा हाथ लगा दीजिए।"[13] यह सरल -सा निवेदन जमींदार के भीतर संवेदना जगाता है। उसे यह अनुभव होता है कि यह मिट्टी उस स्त्री के जीवन और स्मृतियों से गहराई से जुड़ी है। परिणामस्वरूप उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है और वह झोपड़ी वापस लौटा देता है। इस प्रकार 'एक टोकरी भर मिट्टी' हिंदी कहानी के विकास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध होती है, जिसमें यथार्थ, करुणा और सामाजिक चेतना का प्रभावशाली समन्वय देखने को मिलता है।

प्लेग की चुड़ैल' (1902) मास्टर भगवानदास की एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक हिंदी कहानी है, जिसमें ग्रामीण जीवन, स्त्री-पीड़ा और सामाजिक अंधविश्वास का यथार्थ चित्रण मिलता है। कहानी में 'छिन्ना' नामक स्त्री को प्लेग के समय अपशकुनी मानकर समाज उससे दूरी बना लेता है और वह अकेली पड़ जाती है। धीरे-धीरे उसे एक सामान्य स्त्री से भय के प्रतीक में बदल दिया जाता है—"गांववालों के लिए छिन्ना अब एक औरत नहीं रही थी, वह एक वहशत थी, जिसे देखते ही लोगों की आत्मा सिहर उठती थी। प्लेग की तरह वह भी गुनहगार थी"[14] यहाँ प्लेग केवल पृष्ठभूमि है, जबकि वास्तविक कथ्य समाज की अमानवीय मानसिकता को उजागर करना है। इस संदर्भ में मैत्रेयी पुष्पा का मत है— "यह कहानी स्त्री को लोक विश्वास के दायरे में कैद करने के खिलाफ एक गहरी आवाज है, जो केवल साहित्य नहीं सामाजिक दस्तावेज भी बन जाती है"[15] डॉ. भवदेव पांडेय के अनुसार—"हिंदी की यह पहली कहानी थी जो वस्तु और रूप दोनों में पूरी तरह मौलिक और पूरी तरह अनुभूत थीं"[16]

1902 में पंडित किशोरीलाल गोस्वामी द्वारा लिखित 'सुभागी' हिंदी कहानी के प्रारंभिक दौर की एक महत्वपूर्ण रचना के रूप में सामने आती है, जिसका प्रकाशन 'सुधाकर' पत्रिका में हुआ था। यह कहानी सामाजिक यथार्थ, स्त्री जीवन और पारिवारिक मूल्यों को केंद्र में रखती है। इसमें एक विधवा स्त्री के जीवन-संघर्ष और समाज की

संकीर्ण मानसिकता का संवेदनशील चित्रण किया गया है।विधवा होने के बाद सुभागी समाज की रुढ़ियों और उपेक्षा का शिकार बनती है, जिसे इस प्रकार व्यक्त किया गया है—" अब तो वह किसी के लिए सुभागी नहीं रही ; वह अभागिन है, अशुभ है , अपवित्र है।"[17] चारों ओर से तिरस्कार और संदेह का सामना करने पर भी सुभागी प्रतिशोध का मार्ग नहीं अपनाती, बल्कि उसका मौन ही उसका प्रतिरोध बन जाता है—"सुभागी कुछ नहीं बोली, उसकी आंखों से दो बूंद आंसू गिरे और वह चुपचाप भीतर चली गई।"[18] कहानी का अंत भी अत्यंत सार्थक है, जहाँ वही स्त्री, जिसे समाज ने ठुकरा दिया था, अंततः सम्मान की पात्र बनती है—'जिसे सबने त्याग दिया था वही अंत में सबकी श्रद्धा की पात्र बनी।'इस प्रकार 'सुभागी' केवल एक कथा नहीं, बल्कि उस समय के समाज में स्त्री की स्थिति और उसके अंतर्निहित संघर्ष का सशक्त चित्रण है। यह कहानी हिंदी गद्य में स्त्री चेतना और यथार्थवाद की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखी जा सकती है।

'दुलाईवाली' बंग महिला की एक उल्लेखनीय कहानी है, जिसे हिंदी कहानी के प्रारंभिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह उस समय की रचना है, जब हिंदी कथा-साहित्य उपन्यासात्मक स्वरूप से अलग होकर स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित हो रहा था। इस संदर्भ में कहा गया है—"हिंदी की वास्तविक पहली कहानी बंग महिला की दुलाईवाली है।"[19]

कहानी का आधार काशी से इलाहाबाद की यात्रा है, जिसमें बंशीधर, जानकी देवी और नवलकिशोर जैसे पात्रों के माध्यम से घटनाएँ आगे बढ़ती हैं। नवलकिशोर का स्त्री-वेश धारण कर बंशीधर को भ्रमित करना कथा में हास्य और रोचकता उत्पन्न करता है।शिल्प की दृष्टि से कहानी में घटनाओं का क्रमबद्ध विकास, सरल कथानक और स्वाभाविक संवाद मिलते हैं। इसकी भाषा सहज और बोलचाल के निकट है, जिससे पाठक के साथ सीधा संबंध बनता है। साथ ही, हास्य-व्यंग्य के माध्यम से उस समय की सामाजिक प्रवृत्तियों पर हल्का प्रहार भी किया गया है।इस प्रकार 'दुलाईवाली' हिंदी कहानी के प्रारंभिक स्वरूप का सशक्त उदाहरण है, जो इसे एक स्वतंत्र और प्रभावी विधा के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

ग्राम कहानी' अपने कथ्य और शिल्प की दृष्टि से प्रारंभिक हिंदी कहानियों में एक अलग पहचान रखती है। इसमें कल्पना से हटकर यथार्थ और सामाजिक करुणा का सशक्त चित्रण मिलता है। प्रसाद ने ग्रामीण जीवन की समस्याओं, असमानता और मानवीय पीड़ा को संवेदनात्मक तथा विचारोत्तेजक रूप में प्रस्तुत किया है। इसी कारण सत्यप्रकाश मिश्र ने लिखा है—"ग्राम हिंदी की पहली आधुनिक कहानी है क्योंकि शिल्प और अंतर्वस्तु दोनों ही दृष्टि से यह एक भिन्न पथ का संकेत करती है ।"[20]

कहानी का परिवेश ग्रामीण जीवन है, जहाँ एक बाहरी व्यक्ति गाँव की वास्तविक परिस्थितियों से परिचित होता है और एक पीड़ित स्त्री की कथा के माध्यम से सामाजिक विषमता को समझता है। यहाँ कथा केवल घटना-चित्रण नहीं, बल्कि समाज के अंतर्विरोधों को उजागर करने का माध्यम बन जाती है।'ग्राम' हिंदी कहानी के विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें यथार्थ, संवेदना और नवीन शिल्प का समन्वय मिलता है।

हिंदी कहानी की नींव एक दीर्घ और क्रमिक विकास-प्रक्रिया का परिणाम है, जो प्राचीन कथात्मक परंपराओं, सामाजिक परिवर्तनों और आधुनिक चेतना के समन्वय से निर्मित हुई। प्रारंभिक दौर में कहानी का स्वरूप अनुवाद और अनुकरण पर आधारित रहा, किंतु बीसवीं शताब्दी के आरंभ तक आते-आते इसने अपनी स्वतंत्र पहचान बनानी शुरू कर दी।इस विकासक्रम में 'सरस्वती' और 'इंदु' जैसी पत्रिकाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिन्होंने नए लेखकों को मंच प्रदान किया और कहानी को एक सुसंगठित विधा के रूप में स्थापित करने में सहयोग किया। 'इन्दुमती', 'एक टोकरी भर मिट्टी', 'सुभागी', 'दुलाईवाली' और 'प्लेग की चुड़ैल' जैसी कहानियों ने कथानक, चरित्र-चित्रण, यथार्थ और सामाजिक चेतना के तत्वों को विकसित करते हुए हिंदी कहानी की आधारशिला को सुदृढ़

किया।इन प्रारंभिक कहानियों में सामाजिक यथार्थ, स्त्री-जीवन, मानवीय संवेदना और अंधविश्वास जैसी समस्याओं का चित्रण मिलता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि हिंदी कहानी केवल मनोरंजन का माध्यम न रहकर समाज का यथार्थ प्रतिबिंब बन चुकी थी।

अतः कहा जा सकता है कि हिंदी कहानी की नींव परंपरा और आधुनिकता के समन्वय से निर्मित हुई है, जिसने आगे चलकर इसे एक सशक्त, संवेदनशील और प्रभावशाली साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित किया।

संदर्भ-ग्रंथ :

1. प्रोफेसर बासुदेव हिन्दी कहानी और कहानीकार. वाणी-विहार, बनारस, पृ. 3।.
2. मुंशी प्रेमचंद्र : मानसरोवर, भाग-1, पृष्ठ- 8.
3. सत्यकाम, उपन्यास : पहचान और प्रगति, ग्रंथ निकेतन, पटना, 1985, पृ0 3.
4. शुक्ल हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा पृष्ठ 312-315.
5. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी। हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास। पृ.222.
6. श्रीकृष्ण लाल, आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास. हिन्दी परिषद्, विश्वविद्यालय, प्रयाग, पृ.322।.
7. शुक्ल हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा पृष्ठ 556.
8. श्रीकृष्ण लाल आधुनिक साहित्य. हिंदी परिषद्, विश्वविद्यालय, प्रयाग, पृ. 312.
9. गोस्वामी, किशोरीलाल, इंदुमती, सरस्वती (पत्रिका) इंडियन प्रेस प्रा0 लि0 इलाहाबाद,जून 1900,पृष्ठ 180.
10. वही, पृष्ठ 180.
11. राय, गोपाल, हिंदी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2008, पृष्ठ 45.
12. प्रसाद दिनेश, हिंदी गद्य-पद्य संग्रह भाग-2, आरियंट ब्लैक्सवान प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद, वर्ष-2012, पृ. 4.
13. स्प्रे, माधवराव, भवदेव पाण्डेय, रेमाधव पब्लिकेशन लिमिटेड संस्करण - 2006, पृष्ठ – 59.
14. मोखाल, भगवान दास, हंस पत्रिका, अगस्त 2001, पृष्ठ 143.
15. पुष्पा, मैत्रेयी, हिंदी कथा साहित्य में स्त्री, वाणी प्रकाशन, 2010, पृष्ठ 143.
16. पाण्डेय, भवदेव, वर्तमान साहित्य (शताब्दी कथा -विशेषांक) हिंदी कहानी 1900 से 1915 तक नामक लेख, पृष्ठ संख्या 56.
17. गोस्वामी, किशोरीलाल, सुभागी, पत्रिका, सुधाकर, वर्ष 1902.
18. वही
19. राय, कृष्णदास, तथा वाचस्पति पाठक (संपा.). इक्कीस कहानियाँ. भारती भंडार, इलाहाबाद, पृ. 14
20. मिश्र, सत्यप्रकाश (संपा.). जयशंकर प्रसाद ग्रंथावली, खंड–ख. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010, पृ. 8।.

•